कक्षा - 12

स्वतंत्र भारत में राजनीति

अध्याय - 7

क्षेत्रीय आकांक्षाएँ

भाग - 5

Satyaveer Yadav

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

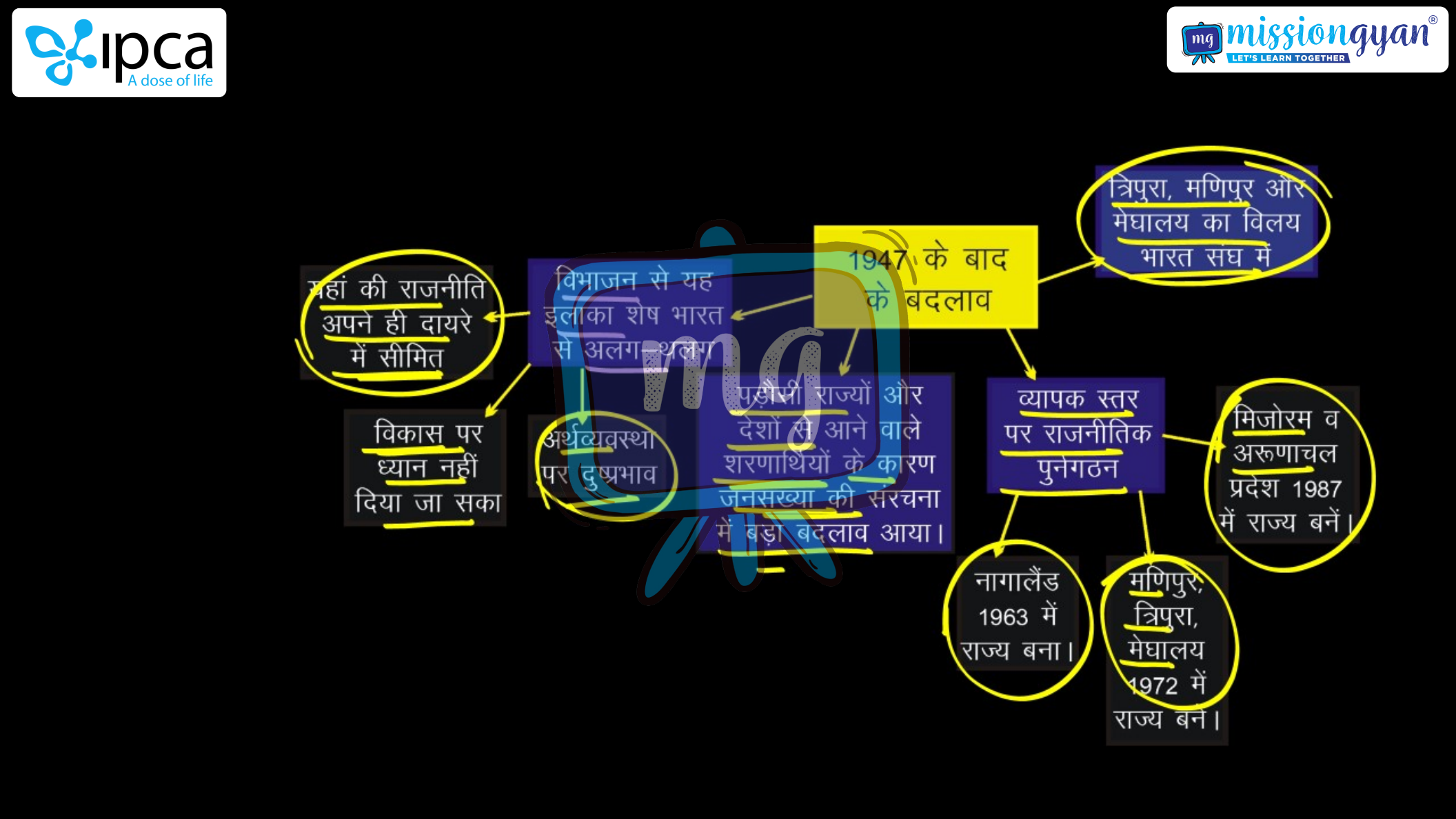


सप्तभगिनी

पूर्वोत्तर क्षेत्र

- सात राज्य
- देश की 4% आबादी
- 22 किमी. की पतली सी राहेदारी इस इलाके को भारत से जोड़ती है।
- चीन, म्यांमार और बांग्लादेश से इसकी सीमाएं लगती हैं।
- भारत के लिए दक्षिण–पूर्व एशिया का प्रवेश द्वार

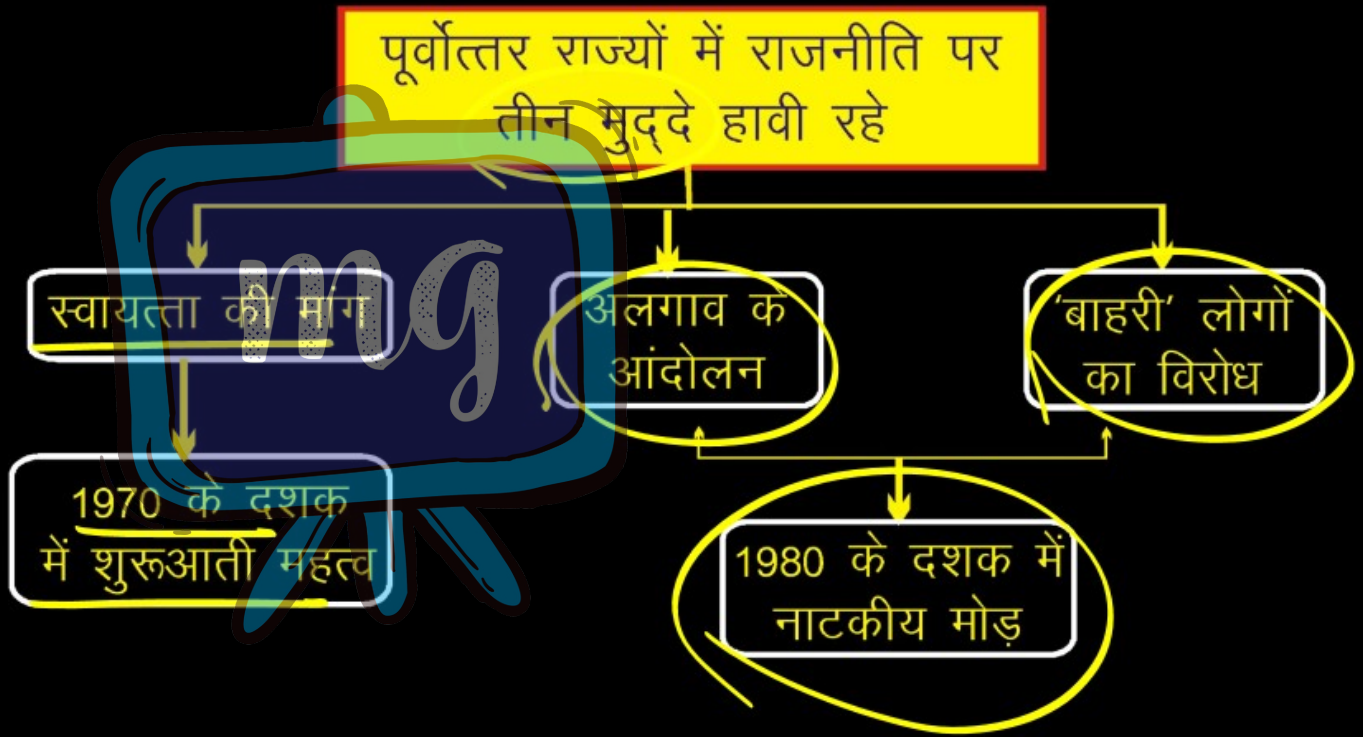



1947 के बाद के बदलाव
त्रिपुरा, मणिपुर और मेघालय का विलय भारत संघ में
विभाजन से यह इलाका शेष भारत से अलग-थलग
यहां की राजनीति अपने ही दायरे में सीमित
विकास पर ध्यान नहीं दिया जा सका
अर्थव्यवस्था पर दुष्प्रभाव
पड़ौसी राज्यों और देशों से आने वाले शरणार्थियों के कारण जनसंख्या की संरचना में बड़ा बदलाव आया।
व्यापक स्तर पर राजनीतिक पुनर्गठन
मिजोरम व अरूणाचल प्रदेश 1987 में राज्य बनें।
नागालैंड 1963 में राज्य बना।
मणिपुर, त्रिपुरा, मेघालय 1972 में राज्य बने।

ipca
A dose of life

mg missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- पूर्वोत्तर का अलग-थलग पड़ जाना।
- इस इलाके की जटिल सामाजिक संरचना।
- इस इलाके का देश के अन्य हिस्स के मुकाबले आर्थिक रूप से पिछड़ा होना।
- इन सब कारणों से पूर्वोत्तर के राज्यों से बड़ी बेतरतीब मांगें उठी।
- इस इलाके की अंतर्राष्ट्रीय सीमा काफी बड़ी है लेकिन पूर्वोत्तर और शेष भारत के बीच संचार व्यवस्था बड़ी लचर है।
- इससे भी राजनीति का स्वभाव ज्यादा संवेदनशील रहा।


पूर्वोत्तर राज्यों में राजनीति पर तीन मुद्दे हावी रहे
स्वायत्ता की मांग
अलगाव के आंदोलन
'बाहरी' लोगों का विरोध
1970 के दशक में शुरूआती महत्व
1980 के दशक में नाटकीय मोड़

ipca
A dose of life

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



असमिया

स्वायत्ता की मांग

बड़े जनजा... समुदाय के नेता असम में अलग होना चाहते थे।

आजादी के वक्त मणिपुर, त्रिपुरा, को छोड़कर पूरा इलाका असम कहलाता था।

गैर असमी लोगों को लगा कि असमी की सरकार इन पर असमी भाषा थोप रही है।

'ईस्टर्न इंडिया ट्राइबल यूनियन' का गठन किया गया।

EITU

1960 में 'ऑल पार्टी हिल्स कांग्रेस' में तब्दील हो गया।

APHC

राजनीतिक स्वायत्ता की मांग उठी।

विरोध प्रदर्शन एवं दंगे

एक अलग जनजातीय राज्य बनाया जाये।

एक की जगह कई जनजातीय राज्य बनें।